पुष्पांजलि

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

मई 2024

लघुकथा
अंक

पुष्पांजलि

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

वर्ष 4 / अंक 52 / मई 2024

अतिथि संपादक :
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

संपादक :
गोविन्द मूँदड़ा

परामर्श मंडल :
डॉ. विष्णु सक्सेना
डॉ. सुरेश अवस्थी
डॉ. कीर्ति काले
बी.एल. आच्छा
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

रेखांकन :
संदीप राशिनकर

साज-सज्जा :
विवेक अग्रवाल

विस्तारक मंडल :
राजेश मानव - नई विधा, नीमच
डॉ. सुमन अग्रवाल - अंतर्राष्ट्रीय
श्री राम मूँदड़ा - कटपेस्ट.कॉम, इंदौर

प्रकाशक :
पुष्पा मूँदड़ा
गिरिराज मूँदड़ा

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

प्रकाशन स्थल : 24/4, First Cross Street,
Kilpauk Garden Colony, Chennai - 600010.

मूल्य :

मात्र आपकी मुस्कान

पुष्पांजलि की विशेषताएँ

जहाँ-जहाँ भी ऐसे चिह्न दिए गए हैं, वहाँ क्लिक करने से आप उन लिंकों को खोल पाएँगे।

वीडियो

इस तरह के चिह्न को क्लिक करने से आप वीडियो खोल पाएँगे

व्हाट्स एप

इस तरह के चिह्न को क्लिक करने से आप हमारे व्हाट्स एप पर सीधे जुड़ सकेंगे

ऑडियो

इस तरह के चिह्न को क्लिक करने से आप ऑडियो रिकॉर्डिंग सुन पाएँगे

पुस्तक

इस तरह के चिह्न को क्लिक करने से पुस्तक का पूरा PDF खुल जाएगा

वेब साइट

इस तरह के चिह्न को क्लिक करके आप सीधे उस वेब साइट पर जा सकेंगे

संवेदना का प्रभाव हैं लघुकथाएँ

सृजन और लेखन दो विपरीत ध्रुव हैं। प्रयास के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। सच्चा सर्जन वह अन्त:स्फूर्त कार्य है, जो रचनाकार को अभिव्यक्ति के लिए विवश करता है। उस क्षण को सहेजा न जाए, तो वह पाखी-सा फुर्र भी हो सकता है, जो कभी हाथ आने वाला नहीं। इस सर्जन के पीछे निश्चित रूप से कोई व्याकुलता होती है, जो साकार होना चाहती है। अच्छी लघुकथाओं में नया कहने की यही व्याकुलता होती है, जो जीवन-अनुभव के ताप में तपकर रचना-रूप धारण करती है।

कोरा विचार, कुछ विशृंखलित संवाद या दैनन्दिन की घटनाएँ, लघुकथा नहीं होतीं। किसी लघुकथा की सृजन-प्रक्रिया, भले ही रचना 10-12 पंक्तियों की हो, एक दिन का या एक पल का काम नहीं। वह स्रोत से रिसने वाली क्षीण धारा है, जो चट्टानों से उतरते-उतरते वेगवती नदी बनने को आतुर हो उठती है। मानव बाह्य जगत् से जितना जुड़ा है; उतना ही वह अन्तर्जगत् की जटिलता को भी जी रहा है। अनुभूति की सघनता एवं संवेदना का गहरा प्रभाव लघुकथा का आधार बनते हैं।

आदरणीय गोविन्द मूँदड़ा जी ने पुष्पांजलि के 50 वें अंक तक लघुकथा को हज़ारों पाठकों तक पहुँचाया है। लघुकथा का यह लघु अंक उसी दिशा में एक और सोपान है। आशा है इस अंक की रचनाएँ पाठकों को पसन्द आएँगी।

- रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

कथ्य की ताज़गी बरकरार

दादी-नानी के मुँह से कहानियाँ सुनते-सुनते ही हम बड़े हुए हैं। फिर साहित्यिक पुस्तकों, पत्रिकाओं में कहानियाँ पढ़ते रहे। कहानियाँ हमारे लिए मनोरंजन भी थीं और शिक्षा भी। यहाँ तक कि मैंनें तो रामायण व महाभारत को भी कहानियों के संदर्भ में ही पढ़ा और समझा है।

पहले मनोरंजन के उतने साधन उपलब्ध भी नहीं थे और न पैसे कमाने के लिए इतनी लंबी दौड़; इसलिए जीवन में समय ही समय था। उपन्यास और कहानियाँ पढ़कर समय बीतता था। मगर अब समय बदल गया है। व्यस्तता के कारण लोगों के पास समय की कमी हो गई है।

लंबे-चौड़े प्रेम-पत्र अब 'आई लव यू' में बदल गए हैं। बाप-दादा की चिट्ठियाँ, अंतर्देशीय पत्र और पोस्ट कार्ड, जिनमें हाशिये तक में संदेश भर दिए जाते थे, अब मोबाइल पर मात्र चार पंक्तियों के संदेश में सिमट गए हैं, तो कहानियाँ भी भला इससे कहाँ अछूती रहतीं। उनका स्थान अब उतना ही गहरा प्रभाव छोड़ने वाली लघुकथाओं ने ले लिया है। लघुकथाओं में कहानियों की तरह कथ्य की ताज़गी, जीवन्तता और प्रभाव की ऊर्जा तो बरकरार है।

लीजिए प्रस्तुत है नए पुराने रचनाकारों की लघुकथाओं का एक अनुपम गुलदस्ता, कुछ बोलती लघुकथाएँ और चुनी हुई लघुकथाओं पर चर्चा के साथ पुस्तकें। देश-विदेश के चुने हुए कथाकारों की कथाओं की सुगन्ध आपको निर्मल आनन्द से भर देगी।

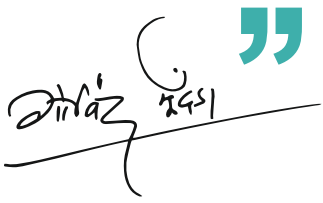

क्या आपको
धर्मयुग,
सारिका,
कादम्बिनी,
साप्ताहिक
हिन्दुस्तान आदि
पत्रिकाओं की
कमी खलती है?

आइए, इस कमी को पूरा करने का प्रयास करें।
पिछले 50 अंकों की चुनिन्दा रचनाओं
का अप्रतिम संकलन

पुष्पांजलि वार्षिकी 2024

मात्र इसकी लागत मूल्य पर उपलब्ध

मूल्य : ₹ 150 (रजिस्टर्ड पोस्ट व्यय सहित)

कृपया भुगतान राशि का स्क्रीन शॉट अपने नाम,
पूरा पता व पिनकोड सहित निम्न नंबर पर भेजें –

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

Name : PUSHPANJALI
A/c No. 06410200004374
IFSC : BARB0PURASA
Bank of Baroda,
Purasawalkam Branch

UPI ID : govindbmundra@okicici

9841025595

बच्चों की आँखें

आनन्द हर्षुल

बहुत बड़ा बगीचा है। बगीचे में बहुत से पेड़ है, पेड़ों पर बहुत सी चिड़ियाँ है। पौधे है। बहुत से फूल हैं, पौधों पर फूलों पर बहुत सा पराग है, पराग पर, बहुत सी तितलियाँ हैं। इन सब के साथ, बहुत से बच्चे हैं बगीचे में। हरी बेंचों पर बैठे, बैठे, एक दूसरे से सटे-सटे, एक-एक हरी बेंच पर चार-चार पाँच-पाँच। बगीचे में जितनी हरी बेंच हैं, यहाँ-वहाँ छिटकी-सी रखी, उन पर यहाँ-वहाँ छिटके से बैठे हैं। बच्चे सिर झुकाए सबके हाथों में मोबाइल है, मोबाइल की स्क्रीन पर एक गेम चल रहा है, जिसमें जंगल में युद्धरत एक योद्धा है-चपल ओर तीव्र अपने आस-पास का, सबकुछ तहस-नहस करता योद्धा। बगीचे की बेंचों पर बैठे सारे बच्चे युद्धरत है जंगल में। मोबाइल की स्क्रीन के जंगल में, भटक रहे हैं सारे बच्चे। सारे बच्चे मोबाइल-स्क्रीन के भीतर युद्धरत हैं।

मोबाइल-स्क्रीन के जंगल में, नकली पेड़ हैं, चिड़ियाँ है नकली, नकली पौधे हैं, नकली तितलियाँ है, फूलों पर पराग हैं नकली, जंगल में नकली घास है, जो युद्धरत नकली योद्धा के पैरों तले, बार-बार कुचली जा रही है।

मोबाइल स्क्रीन में उभर रही सारी नकली चीजों को देखती बच्चों की आँखें भर असली हैं। असली आँखों से वे मोबाइल की स्क्रीन में, रची गई नकली दुनिया को देख रहे हैं।

बगीचे में बैठे बच्चों के जीवन में अनुपस्थित है वह बगीचा, जिसमें बैठे हैं बच्चे, बगीचे के असली, पेड़-पौधे, चिड़ियाँ, तितलियाँ, फूल दुखी हैं कि उनके लिए नहीं है बच्चों की आँखें। □

मरुस्थल के वासी

श्याम सुन्दर अग्रवाल

गरीबों की एक बस्ती में लोगों को संबोधित करते हुए मंत्रीजी ने कहा,''इस साल देश में भयानक सूखा पड़ा है। देशवासियों को भूख से बचाने के लिए जरूरी है कि हम सप्ताह में कम से कम एक बार उपवास रखें।''

मंत्री के सुझाव का लोगों ने तालियों से स्वागत किया।

''हम सब तो हफ्ते में दो दिन भी भूखे रहने के लिए तैयार हैं।'' – भीड़ में सबसे आगे खड़े व्यक्ति ने कहा।

मंत्रीजी उसकी बात सुनकर बहुत प्रभावित हुए और बोले, ''जिस देश में आप जैसे भक्त लोग हों, वह देश कभी भी भूखा नहीं मर सकता।''

मंत्रीजी चलने लगे, जैसे बस्ती के लोगों के चेहरे प्रश्नचिह्न बन गए हों। उन्होंने बड़ी उत्सुकता के साथ कहा,''अगर आपको कोई शंका हो तो दूर कर लो।''

थोड़ी झिझक के साथ एक बुजुर्ग बोला,''साब! हमें बाकी पाँच दिन का राशन कहाँ से मिलेगा?'' □

कुछ नहीं ख़रीदा

सुदर्शन रत्नाकर

वह बीच पर बैठी लहरों को उठते-गिरते देख रही थी। सैंकड़ों सैलानी अलग-अलग क्रीड़ाओं का आनन्द ले रहे थे। कई घूम रहे थे, कई धूप का सेवन कर रहे थे। उस द्वीप का मूल निवासी दो घंटे तक बीच का चक्कर लगाता रहा। कुछ लोगों ने उससे स्टोल और मालाओं के दाम पूछे पर ख़रीदा कुछ नहीं। एक घंटे बाद वह फिर आया। उसने क़ीमत आधी कर दी थी; लेकिन किसीने तब भी कुछ नहीं ख़रीदा। साँझ ढलने से पहले वह एक बार फिर आया। इस बार उसने क़ीमत और भी कम कर दी। अब बहुत सारे लोगों ने उसका सामान ख़रीद लिया था। पर वह कह रहा था कि उसने वस्तुओं की सिर्फ़ लागत ली है। उसे लाभ कुछ भी नहीं हुआ।

लाखों का ख़र्चा करके इस टापू पर आकर मनोरंजन करने वाले सैलानी यहाँ की कला को नहीं ख़रीद सकते। मूल निवासियों की सहायता नहीं कर सकते। उसे बहुत अचरज हो रहा था। अनायास ही उसके मुख से निकला, ''कितने ओछे हैं लोग।''

उसका बारह वर्षीय बेटा भी वहीं खेल रहा था, बात सुनकर बोला, ''आपने भी तो कुछ नहीं ख़रीदा मम्मा।'' □

ब्रेकिंग न्यूज

डॉ. सुषमा गुप्ता

''साहब, ये तो मर चुका है। बुरी तरह जल गई है बॉडी और कार भी बिल्कुल कोयला हो रखी है। आग तो भीषण ही लगी होगी।'' कॉन्स्टेबल रामलाल अपने इंस्पेक्टर साहब से हताश-सा बोला। बहुत भयानक बदबू फैली थी माँस जलने की। वह बदबू से बेहोश होने को था। फिर भी बड़ी हिम्मत से उसने जाँच की।

''अरे पूछ तो रामलाल आसपास के लोगों से, कुछ देखा इन्होंने?'' - इंस्पेक्टर साहब गरजकर बोले।

भीड़ में से एक आदमी बोला-''सर कुछ क्या सब कुछ देखा। दस मिनट में तो पूरी तरह से सब जलकर राख हो गया। हम पाँचों यहीं थे तब।''

''आप क्या कर रहे थे पाँचों यहाँ? आपने कोशिश नहीं की आग बुझाने की?''

''सर हम आग कैसे बुझाते?''

''तो आप सब खड़े देखते रहे?''

''नहीं सर! हमने वीडियो बनाई है न। अलग-अलग ऐंगल से। आजकल बहुत डिमांड है ऐसे वीडियो की मीडिया में।'' □

मिसफिट

कमलेश भारतीय

अचानक वह एक ऊँचे पद पहुँच गया। उसे उच्च पद के मुताबिक बड़ी गाड़ी भी मिली और सरकारी बंगला भी! वह हैरान हुआ यह देखकर कि उसका ऑफिस कुछ कदमों की दूरी पर ही है। वह सुबह ड्राइवर को गाड़ी के लिए मना कर पैदल ही मस्ती में ऑफिस पहुँच गया! सबके सब चौंक गए और दूसरे अधिकारी समझाने आए कि ऐसे ऑफिस थोड़े आते हैं।

– फिर कैसे आते हैं?

– ऑफिस की गाड़ी पर! आप तो सारा डेकोरम ही तहस नहस कर दोगे!

दूसरे दिन वह ऑफिशियल गाड़ी में तो आया; लेकिन इससे पहले कि ड्राइवर उतरकर आए और गाड़ी का दरवाजा खोले, वह अपने आप ही दरवाजा खोलकर उतर गया!

फिर साथी अधिकारियों ने हल्ला मचा दिया और ऑफिस में आकर समझाने लगे कि ड्राइवर को गाड़ी का दरवाजा खोलने की परंपरा निभाने दीजिए, नहीं तो ये सिर

पर चढ़ जाएँगे!

वह फिर अनाड़ी ही साबित करार दिया गया!

फिर वह एक क्लब में दोपहर का खाना खाने गया और ड्राइवर को सामने बिठाकर लंच का ऑर्डर दे दिया!

तभी फोन की घंटी बजी, ऐसी बात सुनने को मिली, जैसे कानों में कोई गर्म गर्म तेल डाल गया हो!

फोन क्लब के प्रेजिडेंट का था, जो कह रहा था कि आप कितने स्ट्रगल के बाद इस पद पर पहुँचे हो और ड्राइवर यहाँ अलाउड नहीं हैं, आप इसे बाहर बिठाकर लंच करवा सकते हो!

ओह! शिमला का मॉल रोड याद आ गया, पता नहीं क्यों? वहाँ कभी लिखा रहता था – डाग्स एंड इंडियन्स आर नाट अलाउड!

अब वह सोचता जा रहा है कि कैसा बिहेव करे! कहीं वह मिसफिट तो नहीं? □

पेट का सवाल

सतीश राठी

''क्यों बे! बाप का माल समझकर मिला रहा है क्या?'' गिट्टी में डामर मिलाने वाले लड़के के गाल पर थप्पड़ मारते हुए ठेकेदार चीखा।

''कम डामर से बैठक नहीं बन रही थी ठेकेदार जी। सड़क अच्छी बने, यही सोचकर डामर की मात्रा ठीक रखी थी।'' मिमियाते हुए लड़का बोला।

''मेरे काम में बेटा तू नया आया है। इतना डामर डालकर तूने तो मेरी ठेकेदारी बंद करवा देनी है।'' फिर समझाते हुए बोला,''यह जो डामर है, इसमें से बाबू, इंजीनियर, अधिकारी, मंत्री सबके हिस्से निकलते हैं बेटा। खराब सड़क के दचके तो मुझे भी लगते हैं। चल! इसमें गिट्टी का चूरा और डाल।'' – मन ही मन लागत का समीकरण बिठाते हुए ठेकेदार बोला।

लड़का बुझे मन से ठेकेदार का कहा करने लगा। उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर ठेकेदार बोला,''बेटा, सबके पेट लगे हैं। अच्छी सड़क बना दी और छह माह में गड्ढे नहीं हुए, तो इंजीनियर साहब अगला ठेका किसी दूसरे ठेकेदार को दे देंगे। इन गड्ढों से ही तो सबके पेट भरते हैं बेटा।'' □

मूल्यांकन

उपमा शर्मा

कला प्रदर्शनी में पुरस्कार की घोषणा का सभी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। अनगिनत कलाकार सुबह से ही प्रतियोगिता के लिए चित्र बनाने में लगे थे। एक से एक सुंदर चित्रों से दर्शक दीर्घा सजी हुई थी। दर्शक और चित्रकार दोनों की ही उत्सुकता चरम पर थी। प्रतियोगिता का परिणाम दर्शकों के मत और निर्णायक दोनों के आधार पर आना था। जैसे कि सबको उम्मीद थी, इस बार भी पूर्व की कई बार की विजेता संपदा का बनाया चित्र ही प्रथम पुरस्कार के लिए चुना जाएगा। संपदा मजी हुई चित्रकार थी। रंगो और कूँची से खेलना उसका जुनून था। उसके बनाए चित्र होते ही लाजवाब थे। मंच पर उद्घोषिका ने घोषणा की कि निर्णायकों के परिणाम के अनुसार संपदा जी और अभिनव जी दोनों को बराबर नम्बर मिले हैं। अब दर्शक अपना-अपना मत दें, जिससे परिणाम घोषित किया जा सके। चित्रकारों को भी अपना मत स्वयं या दूसरे के लिए देना था।

संपदा बहुत देर से वह चित्र देख रही थी, जिसे उसके चित्र के बराबर नम्बर मिले थे। चित्रकारी में वो चित्र कहीं से भी संपदा के चित्र से उन्नीस नहीं था।

रंगों के अद्भुत संयोजन के साथ विषयवस्तु भी बहुत सटीक और सार्थक थी। संपदा की आँखों ने चित्र बनाने वाले को तलाशना शुरू किया। ओह! उस चित्रकार के तो हाथ ही नहीं थे। कला का ऐसा जुनून! बिना हाथों के, पैरों के अभ्यास से इतना सुंदर सटीक सार्थक चित्र! स्क्रीन पर मतों का परिणाम दिख रहा था। उसके और उस चित्रकार के बीच कुछ मतों का अंतर चल रहा था। मुक़ाबला इतना दिलचस्प था कि एक मत भी, जिसको मिलता, परिणाम उसी के पक्ष में जाता। संपदा ने दो पल सोचा और अपना मत उस चित्रकार के पक्ष में डाल दिया।

कला-प्रदर्शनी सही चुनाव के सम्मान में तालियों से गूँज उठी। □

क्या आप 'पुष्पांजलि' नियमित प्राप्त करना चाहते हैं ?

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नम्बर पंजीकृत हो जाएगा।

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्नलिखित वाट्स ऐप नंबर द्वारा अपना संदेश भेजें।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

मूल्य :

मात्र आपकी मुस्कान

बच्चा

कुमार संभव जोशी

''पापा! एक चॉकलेट ले लूँ?''

मॉल में एक प्यारे से बच्चे की आवाज़ ने हमारा ध्यान खींचा।

''बेटा! बताया था ना, चॉकलेट से दाँत खराब हो जाते हैं।'' बच्चे के पिता ने इनकार करते हुए उसे समझाया।

''ओ के पापा।'' उसने मन मसोस लिया।

''पापा, मैं ये गुब्बारे ले लूँ?'' रंग-बिरंगे गुब्बारे देखकर उसकी आँखों में चमक उभरी।

''मिडिल क्लास बच्चों जैसी बातें मत करो तुम। अभी दो मिनट में इन्हें फोड़ लोगे। क्या फायदा ऐसी चीजों का?'' पिता ने फिर टाल दिया।

''ओ के पापा।'' - उसकी आँखों में उतरी चमक बुझ गई।

''पापा! वो फ्ल्यूट और डमरू! कितना मजेदार खेल

जमेगा। मैं और दीदी खूब खेलेंगे।'' वह उछला।

''नो बेटा! आई थिंक दिस इज नॉट गुड फॉर यू।''

''ओ के पापा।'' काफी दूर तक उसकी हसरत भरी निगाहें ताकती रही।

''लुक हियर! यह लेगो गेम' तुम्हारे खेलने के साथ ब्रेन डवलपमेंट के लिए भी अच्छा है।'' पापा ने एक बड़े से डिब्बे में पैक महँगा गेम उसके हाथ में थमाया।

''थैंक्यू सो मच पापा।'' बच्चे ने बिना कोई ऐतराज किए गेम ले लिया।

मुझे उसके चेहरे पर जरा भी खुशी नहीं दिखी।

''देखो जी! कितना सभ्य, संस्कारी और आज्ञाकारी बच्चा है। बिल्कुल जिद नहीं करता। हमारे बच्चे तो।'' मेरे साथ उस बच्चे की गतिविधियों को देख रही मेरी पत्नी ने कहा।

''हाँ! आज्ञाकारी या 'सभ्य' तो कह सकते हैं, मगर यह 'बच्चा' तो बिल्कुल नहीं लग रहा।''

मेरी बेटी ने आइसक्रीम से सने हाथ अपनी फ्रॉक से पोंछ लिये थे।

''अच्छे से नहीं खा सकती?'' – पत्नी ने डपटना चाहा, मगर मैंने उसे गोद में उठाकर चूम लिया। □

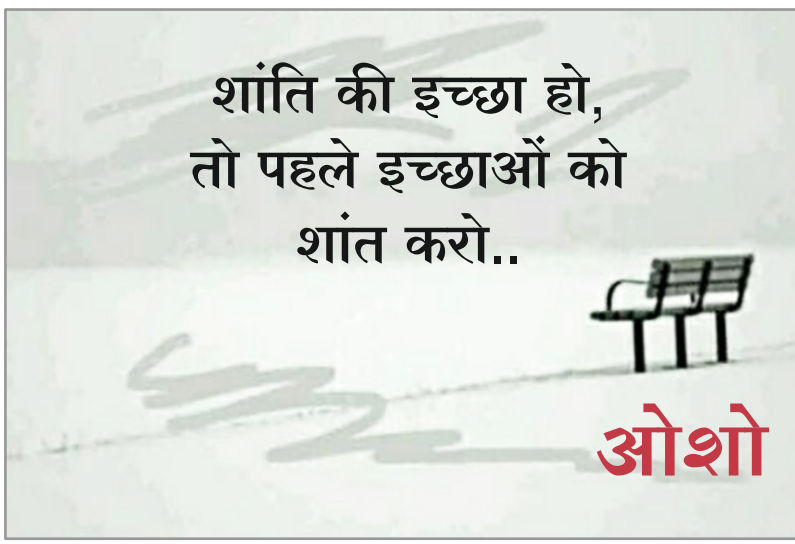

फिर से तैयारी

डॉ. कविता भट्ट

अंदर से ठहाकों की गूँज के साथ चाय-पकोड़े की खुशबू भी आ रही थी; जब एक शालीन, मेहनती और लगभग अधेड़ उम्र की महिला लम्बा इंटरव्यू देकर वातानुकूलित कक्ष से बाहर निकली। वहीं बाहर बैठी एक युवती ने पूछा, ''क्या नाम है तुम्हारा?''

डिग्रियों और पुस्तकों का भारी बैग सँभालते हुए बाहर निकलने वाली महिला बोली, ''शिक्षा।''

बाहर बैठी बनी-ठनी-सी युवती बोली, ''मैं व्यवस्था हूँ; यहीं नौकरी पाना चाहती हूँ। तुम्हारे पास तो इतना कुछ है। मेरे पास तो बस एक फोल्डर में दो-चार कागज ही हैं। देखती हूँ इस इंटरव्यू को दे आती हूँ।''

पूरे आत्मविश्वास और आँखों में चमक लेकर वह भीतर गई। वह चंद मिनटों में ही बाहर आ गई।

दोनों घर को निकलने लगी, तो व्यवस्था बोली, ''सुनो मैं

बाज़ार में ही रहती हूँ और तुम?''

शिक्षा बोली, ''मंदिर के पास।''

व्यवस्था अपनी महँगी कार में बैठने लगी, तो शिक्षा ने तरसी निगाहों से देखा। आँखें नचाते हुए व्यवस्था बोली, ''आओ तुम्हें भी तुम्हारे घर छोड़ते हुए निकल जाऊँगी।''

शिक्षा बोली, ''सॉरी बहिन, आदत नहीं महँगी कार की। पैदल ही चली जाऊँगी।''

व्यवस्था सर्र से कार से निकल गई। शिक्षा को बहुत देर बाद ऑटो मिला। हिचकोले खाते हुए घर पहुँची।

रात को शिक्षा ने मोबाइल खोला; पदों पर भर्त्ती की लिस्ट शिक्षण संस्थान की वेबसाइट पर डाल दी गई थी। व्यवस्था का नाम सबसे पहले था।

शिक्षा ने दो तीन बार चेक किया। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था; क्योंकि पूरा जीवन पढ़ते-लिखते हुए खपा दिया था उसने, मगर नौकरी की लिस्ट में उसका नाम कहीं नहीं था। वह चुपचाप पुरानी खाट पर बैठ गई। थोड़ी देर औंधे मुँह लेटकर वह फूट-फूटकर रोती रही। शिक्षा भीतर से टूट चुकी थी; लेकिन थोड़ी देर बाद उसने उठकर ठंडे पानी से मुँह धोया और कॉपी-पेन लेकर फिर से तैयारी करने लगी। □

मुक्ति

ज्ञानदेव मुकेश

बूढ़े पिता मृत्यु शय्या पर थे। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। पर ऐसा लगता था, उनके प्राण किसी उधेड़बुन में अटके हुए थे। वे जमींदार थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई गरीबों को कर्ज दिया था। उन्होंने उन कर्जदारों से छोटे-छोटे पुर्जे बनवाकर रख लिये थे। उन्होंने एक दिन बेटे से पूछा, ''बेटा, कर्ज के वे पुर्जे कहाँ हैं?''

बेटा समझ गया कि पिता के प्राण इन्हीं कर्जों में उलझे हुए हैं। उसने कहा,''पापा, आप निश्चिंत रहें। मैं उन पुर्जों के बल पर सारा कर्जा वसूल लूँगा। किसी को नहीं छोड़ूँगा।''

पिता ने कहा,''बेटा, वे पुर्जे ले आओ। मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।''

बेटे ने कर्ज के वे सारे पुर्जे पिता को लाकर दे दिए। पिता ने वे पुर्जे सिरहाने के नीचे रख लिये। बेटे ने सोचा,''मोह आदमी से क्या न करा ले।''

थोड़ी देर बाद पिता ने बेटे से बीड़ी पीने की इच्छा जताई। बेटे ने यह इच्छा भी पूरी की। वह पिता को माचिस और कुछ बीड़ी थमाकर चला गया।

अगली सुबह सबने देखा, पिता ने नश्वर शरीर का परित्याग कर दिया था। बेटे ने सबसे पहले वे पुर्जे खोजे मगर वे सिरहाने के नीचे नहीं मिले। तभी घर के कोने में कुछ धुआँ और राख दिखे। बेटा सबकुछ समझ गया। उसने सर पीट लिया। सबने देखा, पिता के चेहरे पर दोष-मुक्ति के भाव थे। वे सभी गरीबों को कर्ज से मुक्त कर खुद भी मुक्त हो गए थे। □

खिड़की

डॉ. छवि निगम

शाम की खिड़की खुली। ट्रे सजाकर कमरे के अंदर लेकर आती विभा के हाथ अचानक काँप गये। ऑफिस से लौटकर सोफे पर पसरे अजय के हाथों में इस वक्त विभा का ही फ़ोन था, किसकी स्क्रीन पर नज़रें गड़ाए उसकी त्यौरियाँ चढ़ती चली जा रही थीं।

हाथों पर महसूस होती गर्म चाय की छीटों की जलन के बावजूद विभा ने अपनी चिंता छिपाने को एक झूठी मुस्कुराहट ओढ़ ली, जो अगले ही पल अजय की तेज चिल्लाहट से गायब भी हो गई।

''ये क्या ऊटपटाँग लिखके पोस्ट करती रहती हो तुम! हैं? और ये लोग कौन हैं, जो वाह-वाह लिखे डाल रहे हैं? बन्द करो ये सब फ़ौरन! समझीं?''

विभा ने कुछ हिम्मत बटोरी - ''वो...कविता...लिखी थी...बस।''

''अच्छा!'' अजय की आवाज़ ज़्यादा तेज थी या फर्श पर पटक दिए गए कप के टूटने की खनक... बताना मुश्किल था। फिर भी झुककर टुकड़े बीनती विभा की कराह उसे सुनाई पड़ ही गई, ''...ख़ुद तो अपने फ़ोन को खोलने का...पासवर्ड तक नहीं...बताते...और...हमें...!''

सोफे से उठते अजय के चेहरे पर सोशल मीडिया का आभासी सभ्यता का मुखौटा चटखने लगा था।

खिड़की बन्द हो चुकी थी। □

आर्द्रता

सन्तोष सुपेकर

बहुत समय से लगातार तेज गति से चल रही ट्रेन शाम चार-पाँच बजे के आसपास एक छोटे से स्टेशन पर देर तक रुक गई तो यात्रियों ने राहत सी महसूस की। हमारे कोच के कुछ यात्री तो खिड़की-दरवाजों से बाहर झाँकने लगे, तो कुछ बाहर खड़े होकर धूम्रपान, तंबाकू, मोबाइल फोन, पानी भरने आदि में व्यस्त हो गए। बाहर घने बादल छाए हुए थे और आसपास ढेर सारे हरे-भरे पेड़ होने के कारण मौसम बड़ा सुहावना प्रतीत हो रहा था।

''तू समझती क्या है अपने आपको?'' अचानक हमारी तरफ आती जोरदार-गरजदार आवाज सुनाई दी, तो सब चौंककर उस दिशा में देखने लगे। एक छोटी-सी बंद छतरी हाथ में लिये एक आदमी, साथ चल रही एक औरत (जो

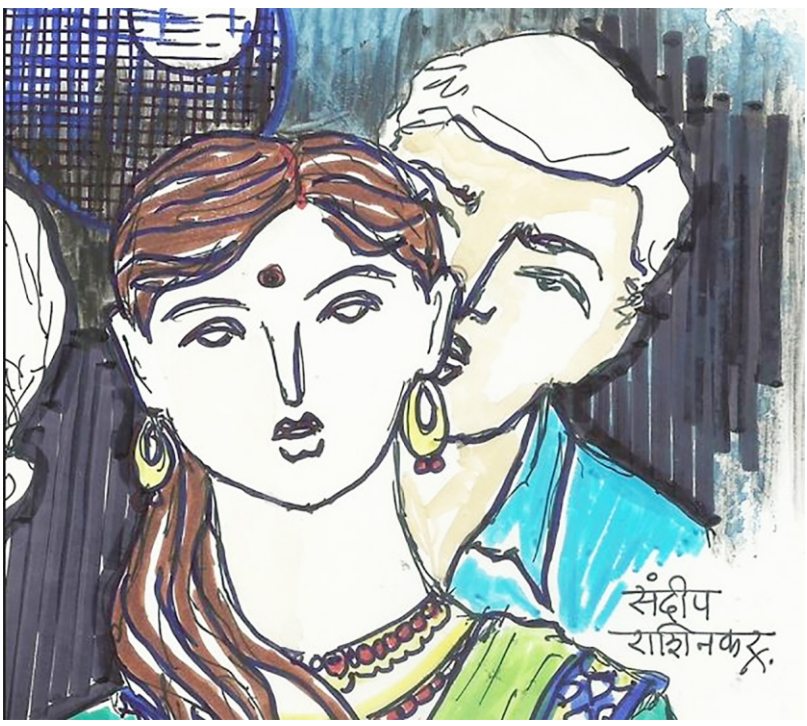

कि उसकी पत्नी थी) को बुरी तरह डाँटता-फटकारता ट्रेन की दिशा में चला आ रहा था,''पहले तेरे भाई ने मेरा मजाक उड़ाया, तब तूने उसका साथ दिया। अभी परसों तेरी भाभी ने मेरी इंसल्ट की, तब भी तू चुप रही। ध्यान रखना, मैं उनकी भी अक्ल ठिकाने लगा दूँगा और तेरी भी'' उसका गुस्सा इतना बढ़ता जा रहा था लगा जैसे कुछ देर में औरत को पीटने लगेगा। औरत जार-जार रोती हुई तेज कदमों से पति के साथ-साथ चलती जा रही थी।

जैसे स्वादिष्ट पकवान खाते हुए मुँह में कोई कंकड़ आ गया हो, गरजती-बरसती वह आवाज सुनकर और ऐसा माहौल देखकर इतने खूबसूरत मौसम में भी हम देखने वालों के मुँह कड़वे हो आए। तभी जोरदार बारिश चालू हो गई। बाहर खड़े यात्री अचकचाकर कोच के अंदर आने लगे। कोच के खिड़की-दरवाजों के काँच गिराए जाने लगे। उसी समय बाहर का दृश्य देखकर हमारे हालिया तल्खी से भरे चेहरे सामान्य हो गए, होठों पर मुस्कान आ गई। सब उँगली उठाकर एक-दूजे को बाहर का दृश्य दिखाने लगे।

हमने देखा कि बारिश चालू होते ही लड़ते-झगड़ते, औरत को मारने पर उतारू, उस आदमी ने छतरी खोलकर औरत के सिर पर तान दी थी और खुद पूरी तरह भीगता हुआ उसके साथ-साथ चल रहा था। हालाँकि उसका डाँटना-फटकारना एवं औरत का रोना-धोना अब भी जारी था, लगातार। □

हमें दुःख वह दे सकता है,
जिससे हम सुख चाहते हैं!

ओशो

पुष्पांजलि

आपको अवश्य पसंद आई होगी !

इस 'निर्मल आनंद' में क्या आप अपने परिजनों व मित्रों को शामिल नहीं करना चाहेंगे?

आनंद तो बाँटने से बढ़ता है, यह तो आप जानते ही हैं।

मात्र Forward ही तो करना है

आपका सहकार ही पत्रिका के प्रचार-प्रसार का आधार है

आपको पुष्पांजलि में क्या अच्छा लग रहा है? इसे और अधिक सुरुचिपूर्ण बनाने की दिशा में आपके विचारों/सुझावों का स्वागत है।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

बुलावा

अंजु खरबंदा

ठक-ठक! ''कौन? दरवाजा खुला है, आ जाओ।''

''राम राम चन्दा!''

''राम राम बाबूजी! आप यहाँ!''

''क्यों मैं यहाँ नहीं आ सकता?''

''आ क्यों नही सकते! पर यहाँ आता ही कौन है!''

''आया न आज! ये कार्ड देने मेरे बेटे की शादी का!''

''कार्ड! बेटे की शादी का!''

''हाँ, अगले महीने मेरे बेटे की शादी है, तुम सब आना, और ये मिठाई सबका मुँह मीठा करने के लिए!''

चंदा बोली,''हम तो जबरदस्ती पहुँच जाते है शादी ब्याह या बच्चा पैदा होने पर, तो लोग मुँह बना लेते हैं, और आप हमें बुलावा देकर!''

''चन्दा, बरसों से तुम्हें देख रहा हूँ, सबको दुआएँ बाँटते..! याद है, जब मेरा बेटा हुआ था, तो पूरा मोहल्ला सिर पर उठा लिया था तुमने खुशी के मारे।''

''हाँ! और आपने खुशी-खुशी हमारा मनपसंद नेग भी दिया था!''

''तुम लोगों की नेक दुआओं से मेरा बेटा पढ़ लिखकर डॉक्टर बन गया है और तुम सबको उसकी शादी में जरूर आना है!''

''जरूर आएँगे! आपने इतनी इज्जत-मान से बुलाया है, तो क्यों न आएँगे!'' कहते हुए चंदा की आँखें नम हो गईं और उसका सिर बाबूजी के आगे सजदे में झुक गया। □

चुभन

रामकरन

हम लोग गाँव छोड़कर सड़क किनारे वाले घर पर रहने लगे थे। मेरे पड़ोस में एक घर बना था पर उसमें कोई रहता नहीं था। कुछ दिनों के बाद एक नया परिवार उसमें रहने आया। हम टकटकी लगाकर उन्हें देख रहे थे। माँ-बाप के साथ दो सुंदर-सुंदर चुलबुली लड़कियाँ थीं, जो बोलती थीं, तो लगता था कि चिड़ियाँ चटर-चटर कर रहीं हों। उनका सामान उतर रहा था; हम ताक में थे कि वे हमसे भी कुछ मदद माँगे। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। सामान के साथ ही पड़ोसी परिवार सहित घर में गुम हो गए।

हमारी नजर उनके दरवाजे पर ही लगी रहती। एक दिन पड़ोसी पिताजी के पास आए। उन्होंने पूछा-''कोई अच्छा बढ़ई हो तो बताएँ।'' पिताजी ने बता दिया। दो दिन बाद एक बढ़ई आया और खटर- पटर शुरू हो गया। मकान के आगे-पीछे जालीदार दरवाजा लगे गए। ये जालीदार दरवाजे तभी खुलते, जब उन्हें बाहर आना होता या अंदर जाना होता। इसके अलावा वे चौबीसों घण्टे बंद रहते।

कभी-कभी घर की मालकिन निकलती, तो माँ से कुछ बात करती। फिर वे अंदर हो जाते। शाम को चारों प्राणी ट्रैक-सूट

में निकलते और स्टेडियम चले जाते। फिर अँधेरा होने पर आते। माँ, आँगन में अक्सर लौकी-कद्दू रोपती थी। जब फल आते, तो वह पड़ोसी को देने चली जाती।माँ काफी देर बाद लौटती और बताती कि चाय-पानी करते देर हो गई।

सुबह-सुबह दोनों बेटियाँ स्कूल चली जातीं और पति-पत्नी ड्यूटी। पड़ोसी का लंबा-चौड़ा सहन दिन भर सूना रहता। धीरे-धीरे उनकी उदासीनता हमें खलने लगी। मन करता कि क्या ऐसा करें कि पड़ोसी जलभुनकर गालियाँ बकना शुरू कर दें। पर वे हमेशा शांत दिखाई पड़ते। इससे हमारी जलन बढ़ जाती।

हम पान खाते, तो पड़ोसी की तरफ थूक देते। चिप्स-गुटके और अन्य सामानों की पन्नियाँ उनके द्वार पर ही फेक देते। माँ उनके घर जाती तो चाय-नाश्ता जरूर करके आती। पर वे अक्सर कहतीं कि पड़ोसन में बहू-बेटी वाला गुण नहीं है। माँ-बाप ने कुछ सिखाया-पढ़ाया नहीं, अंग्रेजन है। उन्हें सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि हमारी जाति जानते हुए भी उसने उनके पैर नहीं छुए थे।

इधर हमने पड़ोसी के सामने खूब गन्दगी फैला दी थी और अनुमान लगा रहे थे कि धैर्य का घड़ा फूटने ही वाला है कि अगले इतवार को हमने देखा-एक मजदूर ने साफ-सफाई करके पड़ोसी का अगवाड़ा-पिछवाड़ा चकाचक कर दिया। हमें लगा कि किसी ने हम पर घड़ों पानी डाल दिया और हम ठिठुरकर सिकुड़ गए हों।

हम भी जिद पर आ गए। अब हम दोस्तों के साथ वहीं बैठते और गम्मज करते। जितने पुकार-पुड़िया खाते, सब पड़ोसी के सामने फेंक देते। हमें पूरा भरोसा था कि दो लड़कियों के बाप को हमारे जैसे उजड्ड लोगों का बैठना जरूर चुभेगा। लेकिन ऐसा न हुआ।

एक दिन पड़ोसी ने मजदूर लाकर अपने द्वार के दोनों किनारों पर क्यारी बनाकर झाड़ रोप दिए। अब हम इस पार और वो उसपार हो गए थे। झाड़ बड़े और घने हो गए और हमें चुभने लगे। □

बुद्ध

पूनम कतरियार

महाबोधि-मंदिर को दूर से ही प्रणाम करते हुए उन्होंने अपनी मनोकामना पूर्ण होने की मन्नत माँगी। कुछ ही देर में वे रघुआ के कच्चे-घर के बाहर खाट पर बैठे थे। दूर तक फैले विशाल खेतिहर जमीन को देखते हुए उन्होंने सोचा-अब सब झमेला खत्म हो जाएगा। बार-बार फसल बुआने-बेचने में छुट्टी बर्बाद होती है। अभी दो महीने पहले ही तो धान की फसल कटवा-बेचकर गए थे। अच्छा है, अब बिल्डर को रिसॉर्ट बनाने देकर, करोड़ों में खेलेंगें!

बिल्डर का इंतजार करते हुए, उनकी आँखों में रिसॉर्ट का स्वरूप झिलमिलाने लगा - दूर तक फैले रिसॉर्ट में लॉन टेनिस, वॉलीबॉल, टेबुल-टेनिस आदि अनेक प्रकार के खेलों के शानदार कोर्ट, कृत्रिम झील में तैरती छोटी-बड़ी नौकाएँ, चीन, जापान, श्रीलंका, थाईलैंड आदि अनेक देशों के बौद्ध-धर्मावलंबियों और पर्यटकों से गुलजार रिसॉर्ट!

उनके चेहरे पर अभिमान का भाव झलका, तो गर्दन थोड़ी अकड़ने लगी। रौबदार आवाज में रघुआ को आवाज दी- "का रे रघुआ, यहाँ से बुद्ध-भगवान का मंदिर दस-बारह किलोमीटर ही होगा न?

बिदेशी लोग तो इधर खूब आते होंगें?''

''जी हुजूर, मंदिर तो ज्यादा दूर नहीं है। बाकी बिदेसी सबका हमको नहीं पता। हमनी का तो दिन आप मालिक लोगन के खेती-बारी और गाय-गोरू में बीत जाता है। बच्चा सब सरकारी स्कूल में पढ़-लिख रहा है, और जिनगी में का चाही।''

रघुआ ने ताजे दही का छाछ उन्हें थमाते हुए जिस निस्पृह भाव से कहा, उसके सामने उन्हें अपना करोड़ों का सपना बड़ा ओछा लगा।

ताजे छाछ के स्वाद में घुली उनकी जुबान लटपटा गई और वे फोन पर कह रहें थे - ''सॉरी, मुझे वह प्रोजेक्ट कुछ खास नहीं लग रहा।''

फोन काटते ही उन्हें बोध हुआ कि उनके सिर से एक बड़ा बोझ उतर गया है। चारों ओर नजर घुमाई, तो रघुआ और आस-पास रह रहे अपने खेतों में काम करनेवाले भूमिहीन परिवारों को अपने दैनिक कार्यकलाप में व्यस्त देखा, उनकी आँखें खुशी से भर आईं और वे असीम आनंद में डूब गए। □

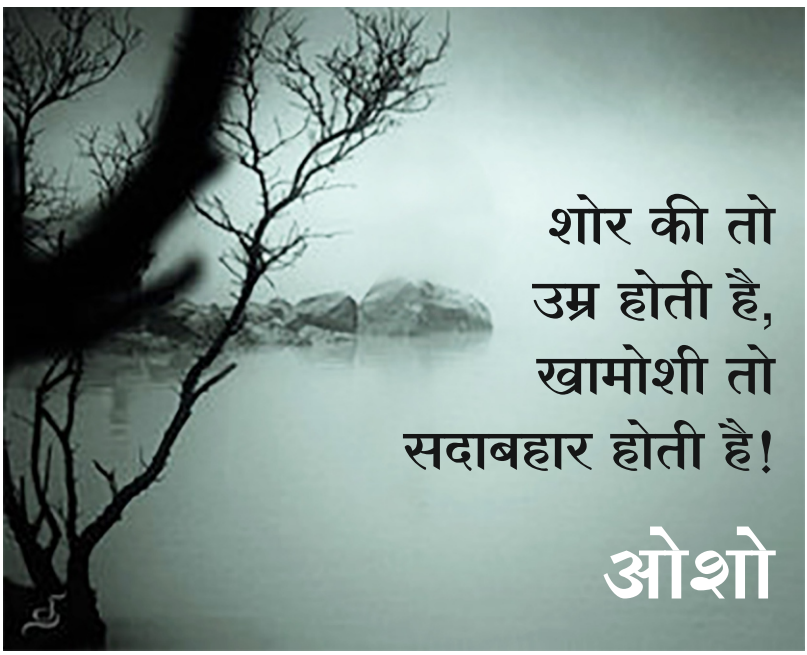

अंकुरण

अर्चना राय

जैसे-तैसे करके, नाश्ता बनाकर पति और बेटे को खिलाकर, लंच पैक देकर विदा किया और वे निढाल सी कुर्सी पर बैठ गई। सुबह से ही उन्हें कमजोरी के साथ चक्कर महसूस हो रहे थे। शायद बीपी बढ़ा हुआ था। किचिन से लेकर बैडरूम तक बिखरे घर को व्यवस्थित करने की सोच उठी ही थीं कि शरीर ने साथ न देकर उनके विचार पर विराम लगा दिया। दवा खाकर थोडी देर आराम करने की सोच, वे वहीं सोफे पर लेट गई।

दीवार पर टँगी महीने भर पहले शादी होकर विदा हुई बेटी की बचपन की फोटो को देखकर बरबस आँखें नम हो गईं। बेटी ने शादी के पहले, पूरे घर की जिम्मेदारी को कितनी अच्छी तरह से सँभाल रखा था। सोचते हुए उनकी आँख कब लग गई, उन्हें पता ही नहीं चला।

''मॉम.. उठिए।'' - बेटे की आवाज सुन उनकी नींद टूटी और वे हड़बड़ाकर उठ बैठी।

''अरे! चार बज गए? तुम स्कूल से आ भी गए, मुझे तो पता ही नहीं चला।''

''रिलेक्स..., कोई बात नहीं मॉम।''

''अभी कुछ बना कर देती हूँ, तुम्हें

भूख लगी होगी।'' – कहकर वे जल्दी से किचिन में चली आई, और उन्होंने वहाँ जो देखा, वो हैरत से देखती रह गई। सिंक में गंदे पड़े बर्तन, धुले हुए, करीने से अपनी जगह पर रखे होने के साथ, पूरा साफ-सुथरा किचिन, खाने की खुशबू से महक रहा था। उन्होंने नोटिस किया कि किचिन के साथ पूरा घर ही पूरी तरह व्यवस्थित था, साथ ही उन्होंने देखा कि बेटे के स्कूल से आने के बाद, हमेशा इधर-उधर बिखरे, रहने वाले जूते, कपड़े आदि अपनी सही जगह पर रखे थे। यह सब देखकर उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ।

''मॉम, आज मैंने पहली बार मैगी बनाई है, चलो मिलकर खाते हैं, मेरी तरह आपको भी बहुत भूख लगी होगी।'' – पीछे से आकर बेटे ने कहते हुए प्यार से उनके गले में बाहें डाल दी। □

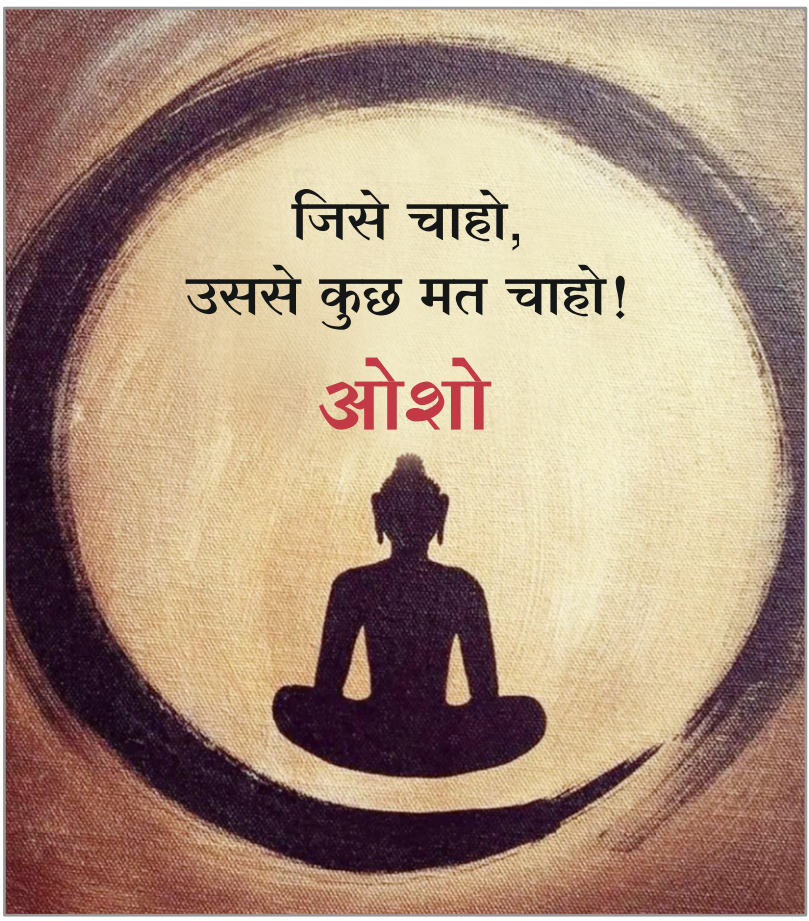

छू लिया

जानकी वाही

सुहासिनी ने दूर से सरसतिया को देखते ही मुँह में कपड़ा लपेटा। उसे लगता है – जब भी कोई भी सड़क से गुज़रता है, तो सरसतिया जानबूझ ज़ोर-ज़ोर से झाड़ू मारकर धूल उड़ाती है।

''पर इन लोगों के मुँह कौन लगे, कुछ कहा नहीं की सात पुश्तें तार देंगे।'' बड़बड़ाती हुई सुहासिनी ने अपने कदम तेज़ किए।

रोज हर सुबह स्कूल जाते समय दोनों की भेंट होती है। एक के मुँह पर जातिगत दर्प और खीझ झलकती, तो दूसरे के चेहरे से गुस्सा और नफ़रत। गनीमत थी दोनों अपने-अपने म्यान में सिमटी रहतीं। हाँ कभी-कभी सरसतिया की बड़बड़ाहट उस तक ज़रूर पहुँचती।

''हमसे परे-परे जाएँगे? हम तो छूत की बीमारी हैं ना?''

जल्दी-जल्दी सरसतिया से दूर जाने की हड़बड़ी में सुहासिनी का पाँव जो मुड़ा, तो दर्द से दोहरी हो वहीं गिर गई। ये देख सरसतिया ने हाथ की झाड़ू फेंक सुहासिनी को थाम लिया, और खींच-तानके पाँव की नस ठीक कर सहारा दे खड़ा कर दिया।

फिर मुस्कुराकर बोली-''हमने छू लिया तुमको।''

''सच कहा, तुमने तो हमारे मन को भी छू लिया।'' – सुहासिनी ने सरसतिया के धूल भरे हाथों को प्यार से पकड़ लिया। लगा, एक अभेद्य दुर्ग ढह गया। □

चकोर

रचना श्रीवास्तव

उस घर के सामने पार्क में एक लड़का रोज़ आता और पेड़ के नीचे खड़ा हो कर चार बजे का इंतज़ार करता। चार बजते ही उस घर की बालकनी में दूधिया से रंग की एक नाज़ुक सी लड़की आती, कभी अपने बाल सुखाती, कभी वहाँ के गमलों में पानी देती और कभी अरगनी पर कपड़े फैलाती। लड़का प्रतिदिन नियम से आता। पेड़ के नीचे खड़ा होता और लड़की को देखता। यही सिलसिला कई हफ़्तों तक चला।

अब उसके दोस्तों को भी इस लड़की के बारे में पता चल गया। अब अक्सर उसके दोस्त भी लड़के के साथ आते और सभी पेड़ के नीचे खड़े हो, चार बजे की प्रतीक्षा करते। अब वह चुपचाप लड़की को नहीं देखता, लड़कों के कहने पर उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने की शालीन कोशिश भी करने लगा, पर लड़की अपना काम करके चुपचाप चली जाती। यह सिलसिला भी बहुत दिनों तक चलता रहा।

अब दोस्त उसको बात करने के लिए उकसाने लगे। कहने लगे के कब तक यूँ दूर-दूर से देखेगा, जा न, उससे बात कर ले। एक दिन लड़के ने बहुत हिम्मत की और सड़क पार कर उस इमारत के सामने पहुँचा और फाटक खोल के अन्दर आ गया।

लड़की अपनी बालकनी में अरगनी पर कपड़े डालने की तैयारी कर रही थी। लड़के ने देखा कि वहाँ तो अरगनी है ही नहीं, डोरी टूटकर ज़मीन पर गिरी पड़ी थी, लड़की इससे अनभिज्ञ रोज़ के अभ्यास से कपड़े डालने के लिए टटोलकर डोरी की तलाश कर रही थी। लड़के को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, उसकी इच्छा हुई कि ज़मीन पर गिरी डोरी को वापस बाँध दे, पर इस डर से कि उसकी मौजूदगी का एहसास होते ही लड़की डरकर चिल्ला ना पड़े, उसने यह विचार त्याग दिया। उसने आँख भरकर लड़की को देखा और उदास मन से वापस आ गया।

दोस्तों को बोला,''पास से देखने पर मुझे लड़की बिल्कुल नहीं जमी। बेमतलब समय ख़राब किया। अब कभी यहाँ नहीं आना है, चलो चलते हैं। सभी वहाँ से चले गए।

यह कई दिन पहले घटा था।

ख़ास बात यह कि वह लड़की अभी भी रोज़ाना चार बजे बालकनी में आकर अपने रोज़ के काम करती है और वह लड़का भी प्रतिदिन पेड़ के नीचे खड़े होकर चुपचाप उसको निहारता रहता है। □

गलती करना उतना गलत नहीं, जितना उसे दोहराना!

प्रेमचंद

बोलती लघुकथाएँ

वाचन : **ऋतु कौशिक**

यहाँ वाचित लघुकथाओं के ऑडियो लिंक दिए गए हैं। इनका वाचन रेडिओ के प्रसिद्ध उद्घोषकों ने किया है। कृपया सुनकर आनंद लीजिए..

लेखक : सुरेश शर्मा

लेखिका : सारिका भूषण

लेखक : विरेन्द्र 'वीर' मेहता

प्रसिद्ध चित्रकार

संदीप राशिनकर

की विशेष कलाकृतियाँ

बुद्धम् शरणं गच्छामि

पुष्पांजलि में अभी तक प्रकाशित संदीप जी के विशेष अभिनव रेखांकन-फीचरों की श्रृंखला देखने के लिए क्लिक करें..

लघुकथा के प्रबुद्ध पाठकों एवं शोधार्थियों के लिए मुख्य पुस्तकें

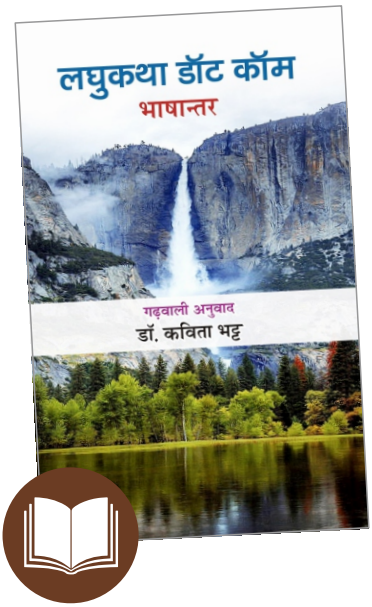

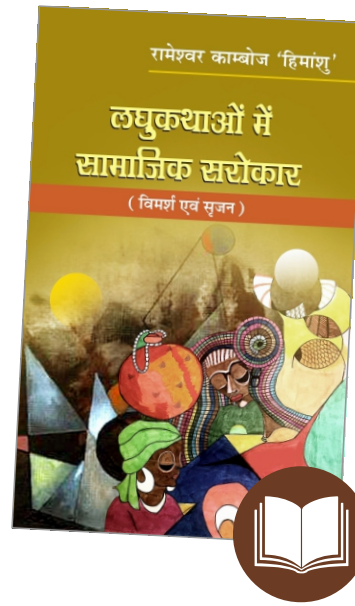

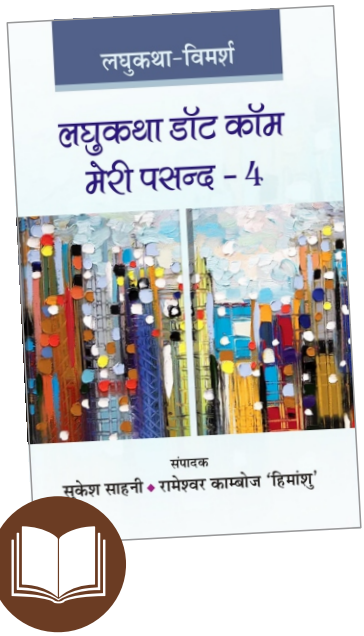

पुष्पांजलि

के पिछले अंक

पुस्तक के नीचे दिए गए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं

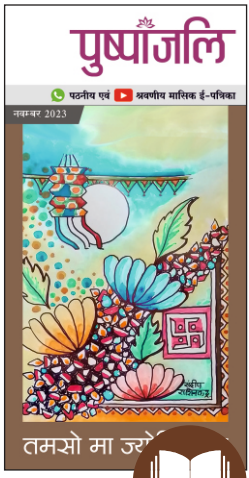

क्लिक करें

क्लिक करें

क्लिक करें

क्लिक करें

क्लिक करें

क्लिक करें

अभी तक के सभी अंकों को देखने के लिए इस लिंक को क्लिक करें

पुष्पांजलि
वार्षिकी 2024

पुष्पांजलि के अप्रैल 2024 अंक में अब तक प्रकाशित 50 अंकों की चुनिंदा रचनाओं के संकलन को अनेक पाठकों ने पसंद किया है तथा इसकी मुद्रित प्रति को उपलब्ध कराने का अनुरोध भी किया है। इसलिए इसे वार्षिकी 2024 के रूप में प्रकाशित किया गया है।

बड़ी साइज के 88 रंगीन पृष्ठों का यह आकर्षक संग्रहणीय अंक अपनी लागत मूल्य पर उपलब्ध है।

मूल्य : ₹ 150 (रजिस्टर्ड पोस्ट व्यय सहित)

कृपया भुगतान राशि का स्क्रीन शॉट अपने नाम, पूरा पता व पिनकोड सहित निम्न नंबर पर भेजें –

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

Name : PUSHPANJALI
A/c No. 06410200004374
IFSC : BARB0PURASA
Bank of Baroda,
Purasawalkam Branch

UPI ID : govindbmundra@okicici

9841025595